एपिसोड 28
वशिष्ठ उवाच

आलेख– डा. अरविन्द दुबे
अवधारणा और समन्वय: बी के त्यागी

कलाकार
माँ (प्रारंभिक चालीस)
पिता (४५ वर्ष)
ऋषि (पुत्र)(२० वर्ष)
सारिका (१८ वर्ष)

(सिग्नेचर ट्यून.....फेड्स आउट)

नैरेटर– विज्ञान रेडियो धारावाहिक 'आने वाला कल' की पिछली कड़ी में आपने सुना कि कैसे विश्व विज्ञान कथा साहित्य में कृत्रिमबुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की अवधारणा विकसित हुई और धीरे–धीरे पुष्पित–पल्लवित होती जा रही है। यह सैमुअल बटनर के उपन्यास से होती हुई यह स्टार–वार्स तक आ पहुंची है जिसे सजीव करने के लिए करोड़ों रुपए के उपकरणों और विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है। ऐसा नहीं है कि कृत्रिम बुद्धि की अवधारणा सैमुअल बटलर की कल्पना से पहले नहीं की गई थी। हम अपनी धार्मिक पुस्तकों को ही लें तो उनमें भी ऐसी कल्पनाएं मिलती हैं जिनमें कृत्रिम बुद्धि की कल्पनाओं के बीज मिलते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि पहले लोगों ने कृत्रिम बुद्धि की परिकल्पना कर ली थी या कि उन्हें कृत्रिम बुद्धि का ज्ञान था या कि पहले लोग रक्तिम बुद्धि युक्त उपकरण बनाते थे। जी नहीं! विज्ञान निरंतर प्रगति करने वाला सुव्यवस्थित ज्ञान है। यह उल्टे पैरों नहीं चलता है। ऐसा नहीं है कि कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग लोगों को पहले से पता था और अब वह ज्ञान विलुप्त हो गया है। हां इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्राचीन कथाकारों ने कहीं–कहीं ऐसी युक्तियों की कल्पनाएं की हैं जिन को पढ़कर ऐसा लगता है कि उनमें आज की कृत्रिम बुद्धि जैसा कुछ होना चाहिए। पर ऐसी मशीनें या यंत्र मानव उस समय में उपलब्ध थे यह मानना सरासर गलत है। ऐसी फंतासियों के रचनाकारों के मस्तिष्क में ऐसी कल्पनाएं थीं जिनका विवरण आज के कृत्रिम बुद्धि वाले उपकरणों या रोबोट्स से काफी मिलता है। हालांकि उन कल्पनाओं का आज की की ऐसी मशीनों से कोई सम्बंध नहीं है पर ऐतिहासिक दृष्टि से उन कल्पनाओं की यहां चर्चा करना मनोरंजक होगा। आइए आपको ले चलते हैं प्राचीन वांग्मय के कल्पना लोक में। कथा है कि एक बार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद वैराग्य हो गया। जीवन

की नश्वरता, आमोद–प्रमोद के साधनों क्षणभंगुरता को एक देखकर वे संसार से विरक्त होने लगे। उनकी सांसारिक भोग आदि में रुचि नहीं रही। यह वही समय था जबकि ऋषि विश्वामित्र राक्षसों के उत्पात से बचने हेतु उन्हें अपने आश्रम में ले जाने के लिए राजा दशरथ के पास उन्हें मांगने के लिए आए थे। उस समय उन्हें उनके इस वैराग्य से निकालने के लिए कथित तौर पर ऋषि वशिष्ठ ने जो उपदेश दिया था उसी को 'योग वशिष्ठ' कहते हैं। यह माना जाता है कि यह पुस्तक मूलतः आदिकवि वाल्मीकि रचित है। इस योग वशिष्ठ के कई प्रकरणों में कई ऐसे पात्रों की कल्पना की गई है जिन्हें देखकर बरबस ही कृत्रिम बुद्धि युक्त यंत्रमानवों की याद आ जाती है।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

शब्द दृश्य–1

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थान–घर का ड्राइंग रूम।

(टीवी चलने की आवाज आती है मानो उस पर युद्ध का कोई सीन चल रहा हो। ऋषि और सारिका बैठे टीवी देख रहे हैं। मां का प्रवेश)

मांः फिर वही टीवी, फिर वही टीवी; आंखें, फोड़ लो अपनीं। ऋषि और सारिका अगर तुम दोनों को अभी से चश्मा न लग जाए तो मुझसे कहना।

ऋषिः आप भी मां, कितनी बार कहा है कि नजर टीवी ज्यादा देखने से कमजोर नहीं होती। उसके अलग कारण होते हैं।

सारिकाः कितनी बार कहा है मां की की सुनी सुनाई बात पर एकदम से विश्वास न किया करो। हर बात में कुछ वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखा करो। हर बात को विज्ञान के पैमाने पर परखने के बाद ही माना करो।

मांः *(गुस्से में)*– अच्छा तुम लोग तो अब पढ़ लिख गए तो यह कम पढ़ी–लिखी मां...

(पिता का आगमन)

पिताः क्या बात है सारिका की मां? क्यों सवेरे सवेरे–बच्चों पर बिगड़ रही हो?

मां: *(क्रोध भरा स्वर)–* में बिगड़ नहीं रही। तुम्हारी यह औलादें खुद बिगड़ रही हैं। जब देखो टीवी.....जब देखो टीवी..... मैंने इनसे कहा कि इससे तुम लोगों की नजर खराब हो जाएगी तो यह ऋषि और सारिका मुझे ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण समझाने लगे।

पिता: वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वह तो हर व्यक्ति में होना चाहिए। बाय द वे ऋषि, तुम लोग क्या देख रहे हो? कोई फिल्म है या सीरियल?

सारिका: पापा यह एस. भांकर की फिल्म है एंथीरान या 'रोबोट'।

ऋषि: बिल्कुल इंसानों जैसा रोबोट। एक वैज्ञानिक रोबोट में कुछ परिवर्तन कर देता है जिससे वह अपराध और गलतियां करने लगता है।

सारिका: उसका मूल निर्माता उसे खुद ही अपने आप को डिस्मेंटल करने का आदेश दे देता है।

ऋषि: हां पापा, क्या फाइट थी फिल्म में?

(फिल्म की आवाज मुखर होती है)

सारिका: ऐसी फिल्में हमारे यहां कहां बन पाती हैं?

पिता: इस प्रकार की कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनों की कल्पना नई नहीं है। कल्पना के स्तर पर हमारी कुछ धार्मिक पुस्तकों में कृत्रिम बुद्धि जैसी चीजों के प्रमाण मिलते हैं।

सारिका: (भड़कते हुए)– आप भी पापा! दुनिया में जब कहीं कुछ नया सुनाई देता है या नया होता है तो आप लोग अपनी धार्मिक पुस्तकें खंगालने लगते हैं।

ऋषि: और कहीं न कहीं से प्रमाण ढूंढ ही लाते हैं कि पहले आप की धार्मिक पुस्तकों में इसका विवरण मिलता है।

पिता: कहीं न कहीं से नहीं, सचमुच ऐसे प्रमाण मिल ही जाते हैं।

मां: लो हो गई बहस चालू। ठीक है तुम लोग बहस करो। मैं तो चलूं, काफी काम फैला है।

(मां का प्रस्थान)

सारिका: अच्छा अगर पहले लोगों को कृत्रिम बुद्धि के बारे में पता था तो यह जानकारी बीच में कहां खो गई थी जो लोगों को दोबारा इसे ढूंढना पड़ा है।

ऋषि: विज्ञान तो उल्टे पांव नहीं लौटता है। उसकी खोजें उसे आगे ही आगे ले जाती हैं।

सारिका: अगर कोई ऐसी जानकारी पहले से रही होती तो कृत्रिम बुद्धि वाले इसे कब के खोज चुके होते।

ऋषि: और कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनें बहुत पहले ही प्रचलन में आ चुकी होतीं।

पिताः नहीं, तुम लोग मेरी बात को गलत समझे। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं था कि प्राचीन समय में लोगों को कृत्रिम बुद्धि के बारे में पता था और कालांतर में यह ज्ञान लुप्त हो गया।

ऋषिः तो?

पापाः ऋषि, कुछ धार्मिक पुस्तकों में रचयिताओं ने ऐसी कल्पनाएं की हैं जो किसी कृत्रिम बुद्धि वाले रोबोट पर एकदम फिट बैठती हैं। हालांकि तब तो उन्हें रोबोट का 'र' भी पता नहीं था।

सारिकाः (व्यंग से)– वरदान, तपस्या वाले समय में रोबोट! क्या कंबीनेशन है?

पिताः सारिका उस समय जब किसी को देह–बल या प्राकृतिक चीजों के बल यथा बायुबल सूर्यबल व आसमानी बिजली का बल या जल के बल से ज्यादा कुछ ज्ञात न था तो उन्होंने असंभव कार्यों की कल्पना को सच बनाने के लिए मानसिक बल की कल्पना की।

ऋषिः मानसिक बल?

पापाः हां मन का बल, विचारों का बल जिसे वह आत्मा का बल कहते थे। यह उनकी सारी कल्पनाओं को संभव कर सकता था और इस पर कोई उंगली भी नहीं उठती थी। इसकी कोई सीमा नहीं थी, कोई स्वरूप नहीं था। इसके लिए किसी यंत्र की आवश्यकता भी न थी। इसलिए असंभव की कल्पना में यह आसानी से फिट हो जाता था।

सारिकाः इंटरेस्टिंग!

पापाः जब कहानियों–कथ्यों में असंभव की कल्पना की जाती है तो उन्हें संभव करने के लिए काल्पनिक उपाय भी ढूंढे जाते हैं। तब विज्ञान इतना विकसित तो था नहीं कि किसी यंत्र का सहारा लिया जाता। ऐसे में मानसिक बल खूब काम आया।

ऋषिः मतलब श्राप, वरदान तपस्या, तरह–तरह के विशिष्ट आयुध; ये सब मानसिक बल की सहारे ही संभव हुए।

पापाः एक्जेक्टली, जब हम कहते हैं कि प्राचीन पुस्तकों में या धार्मिक स्थानों में किसी तकनीक या जानकारी के प्रमाण मिलते हैं तो इसका मतलब यह नहीं होता कि वह जानकारी उस समय उपलब्ध थी।

सारिकाः तो?

पापाः इसका मतलब यह होता है कि उस समय भी लोग ऐसी कल्पनाएं करते थे पर आज की तरह उन्हें साकार करने के लिए उनके पास साधन उपलब्ध नहीं थे।

ऋषिः ओके पापा, पर यह तो बताइए कि आप की धार्मिक पुस्तकों में इस कृत्रिम बुद्धि के क्या क्या प्रमाण मिलते हैं?

पापाः हमारी धार्मिक पुस्तकों में अद्वैत दर्शन की एक पुस्तक है जिसे 'योग वशिष्ठ' कहते हैं।

सारिकाः योग वशिष्ठ?

पापाः कहते हैं कि एक बार जब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम तीर्थ–भ्रमण करके लौटे तो उन्हें संसार से वैराग्य हो गया। उनका मन सांसारिक चीजों से उचट गया। ऐसे में ऋषि वशिष्ठ ने उन्हें धर्म के गूढ़ सिद्धांतों पर प्रवचन दिए। इसे ही 'योग वशिष्ठ' कहा जाता है।

ऋषिः मतलब यह कि ऋषि वशिष्ठ ने इसे लिखा है।

पापाः अरे नहीं, माना जाता है कि आदिकवि वाल्मीकि इस के रचयिता हैं। यह एक बहुत बड़ी पुस्तक है। इसके मूल पाठ में करीब एक लाख श्लोक हैं।

सारिकाः (आश्चर्य से)– एक लाख श्लोकों का प्रवचन?

पापाः हां पर एक 'लघु योग वशिष्ठ' भी प्रचलित है। पर इसमें भी करीब सात हजार श्लोक हैं।

ऋषिः पर पापा इसमें कृत्रिम बुद्धि के प्रमाण कैसे मिले?

पापाः इसमें एक कर्कटी नाम की राक्षसी का विवरण मिलता है।

सारिकाः कर्कटी?

पापाः हां, प्रसंग है कि किसी समय हिमालय पर्वत के शिखर पर एक पर्वताकार शरीर वाली राक्षसी 'कर्कटी' रहती थी। उसके पेट में भूख की अग्नि सदैव जलती रहती थी।

सारिकाः मतलब पापा उसकी भूख कभी मिटती नहीं थी?

पापाः अपनी इस भूख के लिए उसे हर समय भोजन की व्यवस्था करनी पड़ती थी। मानव, जीव–जंतु, कोई भी उसकी पकड़ में आ जाता वह उसे ही खा कर भूख मिटाती। पर उसकी भूख न मिटती।

सारिकाः अच्छा।

पापाः उसने सोचा कि अगर उसका शरीर इतना बड़ा न होता तो उसे इतनी भूख न लगती और उसे भोजन के लिए इतना प्रयास भी नहीं करना पड़ता।

ऋषिः फिर पापा?

पापाः फिर क्या, उसने निर्जल, एक टांग पर खड़े होकर, हाथों को ऊपर उठाकर, लंबे समय तक ईश्वर का नाम जपते हुए तपस्या करनी शुरू की।

सारिकाः कमाल है।

पापाः लंबे समय तक कठिन तपस्या के बाद अंततः ब्रह्मा जी प्रकट हुए तो कर्कटी ने वर मांगा कि मेरा आकार छोटा कर दो ताकि मुझे बार–बार भोजन के लिए भटकना न पड़े।

ऋषिः आगे क्या हुआ पापा?

पापाः ब्रह्मा जी ने उसे सुई के आकार का बना दिया और उसे एक नया नाम दिया 'विसूचिका'। साथ में हिदायत दी कि सिर्फ पापी और अधर्मियों के शरीरों में प्रवेश करके उनके रक्त से ही वह अपनी भूख मिटाए।

सारिकाः तब तो कर्कटी, मतलब विसूचिका का काम आसान हो गया होगा?

पापाः भूख की समस्या तो आसान हो गई पर और नई समस्याएं उत्पन्न होने लगीं।

ऋषिः वह कौन सीं?

पापाः कभी वह कीचड़ में गिर जाती या पानी में डूब जाती तो निकलने के लिए छटपटाती। कभी–कभी किसी के पैर के तले दब जाती तो बार–बार सोचती कि हाय मैंने यह क्या किया? कैसा पर्वत जैसा मेरा शरीर था? मेरी ही मत मति मारी गई थी जो वरदान में छोटा सा शरीर मांग लिया। अब क्या करूं?

सारिकाः पापा यह कहानी मजेदार होती जा रही है। फिर क्या हुआ पापा?

पापाः फिर क्या, उसने एक बार फिर तपस्या की और वरदान मांगा कि उसे इस देह से मुक्ति दी जाए। पर ब्रह्मा जी ने उसे फिर अपना पुराना शरीर पाने का वरदान दे दिया। भूख की समस्या फिर आ खड़ी हुई।

ऋषिः फिर पापा?

पापाः क्योंकि तपस्या से कर्कटी का चित्र निर्मल हो चुका था इसलिए उसने तय किया कि वह सिर्फ अधर्मियों और पापियों को ही भोजन के रूप में प्रयोग करेगी। ऐसे ही उसके दिन गुजरने लगे।

सारिकाः आगे क्या हुआ पापा?

पापाः एक दिन किरात देश का राजा उसका मंत्री और उसके वीर सैनिक उसी जंगल में घूम रहे थे जहां कर्कटी का निवास था। कर्कटी उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुई। वह सोचने लगी कि आज उसे भरपेट भोजन मिलेगा। पर वह यह निश्चित कर लेना चाहती थी कि उसका भोजन बनने वाले वे लोग मूर्ख या विधर्मी हैं।

ऋषिः अच्छा फिर?

पापाः कर्कटी ने उन को ललकारा और कहा कि मैं तुमसे दस प्रश्न पूछूंगी अगर तुम उनके सही उत्तर न दे पाओगे तो निश्चित ही मेरे भोजन बनोगे।

सारिकाः फिर?

पापाः पर राजा ने कर्कटी के दसों प्रश्नों के सही उत्तर दे दिए और बाद में उसे एक प्रस्ताव दिया कि वह उनके साथ उनके राज्य में चले। वह मृत्युदंड की सजा पाए कैदियों को उसे सौंप दिया करेगा जिनको खाकर वह अपना पेट भर सकेगी। कर्कटी ने राजा का प्रस्ताव मान लिया और उसके राज्य में उसके पास जाकर सुख पूर्वक रहने लगी।

सारिकाः वाह पापा वाह, कहानी तो बड़ी अच्छी थी पर इसका कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनों से क्या लेना देना?

पापाः मैंने कहा था ना कि हर घटना को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखना चाहिए। एक वृहदाकार शरीर, जिसे अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। जो अत्यंत शक्तिशाली है और इतना बुद्धिमान भी कि बड़े–बड़े ज्ञानियों को तर्क से हरा सकती है। अपना आकार बदल सकती है। तुम्हें क्या लगता है कि इस तरह का कोई हाड–मांस का प्राणी हो सकता है?

सारिकाः असंभव।

पापाः तो?

ऋषिः मुझे यह विवरण सुनकर तो आज के ट्रांसफार्मर की याद आती है।

पापाः ट्रांसफार्मर भी आज की एक असंभव कल्पना ही तो है.....एक फेंटेसी।

सारिकाः वह तो है।

पापाः तुम लोगों को नहीं लगता कि यह एक ऐसी दानवाकार मशीन की कल्पना है जिसमें बुद्धि भी है और जो रूप परिवर्तन भी कर सकती है।

ऋषिः यानि कृत्रिम बुद्धि वाली विशालकाय रोबोट।

पापाः वही तो। मैंने शुरू में ही कहा था पर तुम मानो तब न।

(मां का प्रवेश)

मांः भाई वाह आज तो आपने रामायण की इतनी नई बातें बताई हैं कि आनंद आ गया। जमाने से रामायण का पाठ करती आ रही हूं पर इस तरह से तो कभी सोचा ही नहीं था।

सारिकाः मां इसके लिए अपनी सोच, अपना दृश्टिकोण वैज्ञानिक रखना होता है।

मांः ठीक है? आगे से ध्यान रखूंगी। अब प्रवचन समाप्त हो गया हो तो अंदर आ जाओ। खाना तैयार है।

(दृश्य परिवर्तन संगीत. .....फेड्स आउट)

शब्द दृश्य–2

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थान–घर का ड्राइंग रूम।

समय–सायं काल।

(कमरे में ऋषि, सारिका और पापा बैठे हैं। टी.वी. पर समाचार आ रहे हैं।)

ऋषिः पापा आप सोफिया को जानते हैं?

पापाः कौन सोफिया?

सारिकाः वही ह्यूमनॉइड रोबोट जिसे सऊदी अरब ने नागरिकता प्रदान की है।

ऋषिः .....और जिसे संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने अपना इन्नोवेशन चौंपियन घोषित किया है।

पापाः लोग हेन्सन रोबोटिक्स के इस ह्यूमनॉइड रोबोट को कुछ ज्यादा ही भाव दे रहे हैं, नहीं?

ऋषिः क्यों क्यों?

पापाः इसलिए कि है तो यह एक कृत्रिम बुद्धि वाली चैटबोट ही। बस इसे एक महिला चेहरे के साथ डिजाइन किया गया है।

सारिकाः चैटबोट क्या?

ऋषिः चैटबोट एक तरह का कंप्यूटर प्रोग्राम होता है जो हमारे साथ हमारी भाषा में संवाद स्थापित कर सकता है। इनमें दो खास बातें होती हैं, एक दिए गए कमांड को समझना और उसका उत्तर देना।

सारिकाः *(हंसते हुए)*– पापा को मत बताओ नहीं तो वह चैटबोट्स को भी अपनी धार्मिक किताबों, वह कौन सी बताई थी उस दिन, हां 'योग वशिष्ठ', उसमें से ढूंढ निकालेंगे।

पापाः *(जोर देकर)*– ढूंढ निकालेंगे नहीं उसमें ऐसा उल्लेख है। उसमें इस तरह के कृत्रिम बुद्धि वाले ह्यूमनोइड रोबोट्स की काफी साफ–साफ कल्पना की गई है।

सारिकाः (हंसते हुए)– देखा ऋषि, देखा। मैं क्या कहती थी?

ऋषिः अच्छा पापा तो बताइए आप अपने योग वशिष्ठ की सोफियाओं के बारे में, यानि की कृत्रिम बुद्धि वाले ह्यूमनोइड रोबोट्स के बारे में।

पापाः योग वशिष्ठ में एक जगह दैत्यों के राजा शंबरासुर का प्रसंग आया है। वह पाताल में राज्य करता था। कहा जाता है कि उसने अपने विस्तृत राज्य के लिए कृत्रिम सूर्य और चंद्रमाओं का निर्माण किया था।

ऋषिः आज भी कुछ देश कृत्रिम चंद्रमा के निर्माण की योजना पर कार्य कर रहे हैं।

पापाः यही तो फर्क है कि आज वे इस योजना पर कार्य कर पा रहे हैं क्योंकि अब विज्ञान इतना विकसित हो गया है। तब पर तब के लेखक भी ऐसी कल्पनाएं ही कर रहे थे। वह बर्फ के समान ठंडी अग्नि की भी कल्पना करते थे।

सारिकाः अच्छा?

पापाः वह दैत्य मायावी युद्ध में निपुण था। उसने अपनी सेना के साथ देवताओं के राज्य को तहस–नहस कर डाला था।

सारिकाः पापा आप भी! उस दैत्य के गुणगान किए जा रहे हैं। बात को आगे तो बढ़ाइए।

पापाः एक बार जब वह दैत्य सो रहा था तब देवताओं ने हमला करके उसकी सारी सेना को नष्ट कर दिया। जागने पर उसने अपने सेनापतियों को देवताओं पर विजय प्राप्त करने को भेजा पर देवताओं ने उन्हें भी मार डाला।

सारिकाः पापा फिर तो शंबरासुर को बहुत गुस्सा आया होगा?

पापाः हां उसने स्वयं देवताओं पर हमला कर दिया। प्रसंग में आगे कहा गया है कि उसकी मायावी शक्तियों से घबराकर देवता उसका सामना करने के स्थान पर घबराकर छिप गए। इस तरह शंबरासुर को कुछ भी हाथ न लगा।

ऋषिः पापा आगे क्या हुआ?

पापाः आगे कहा गया है कि शंबरासुर ने तीन भीषण असुरों का निर्माण किया।

सारिकाः निर्माण किया क्या मतलब?

पापाः निर्माण किया, मतलब बनाया। मतलब ये कि वे हाड़–मांस के प्राणी नहीं रहे होंगे। वे रोबोट्स ही हो सकते हैं, जिनमें डीप–लर्निंग के गुण होंगे।

ऋषिः आप यह निश्चय पूर्वक कैसे कह सकते हैं?

पापाः आगे सुनो तो। फिर तुम दोनों भी यही कहने लगोगे।

सारिकाः ठीक है।

पापाः वे अत्यंत बलशाली थे। उनके शरीर पर्वताकार थे।

ऋषिः *(व्यंग से)*– पर्वताकार रोबोट्स, भाई वाह?

पापाः हो सकता है वे पर्वतों के बराबर न रहे हों पर आम आदमी से काफी बड़े होंगे इसलिए उन्हें पर्वताकार कहा गया होगा।

ऋषिः फिर योग वशिष्ठ वालों को कौन उन्हें बनाना था सिर्फ कल्पना ही तो करनी थी उसमें कौन सी रोक–टोक, चाहे जितना बड़ा मान लो।

सारिकाः जब आगे उनसे बहुत बड़ा काम करवाना था तो आकार तो बड़ा सोचना ही होगा, क्यों पापा?

पापाः हां, उस दैत्य ने उन्हें दाम, व्याल और कट नाम दिए।

सारिकाः दाम, व्याल और कट?

पापाः दाम मतलब शत्रु का दमन करने वाला, व्याल मतलब सांप की तरह शत्रुओं को लपेटने वाला और कट यानी शत्रु के शस्त्रों से अपनी सेना को सुरक्षित रखने वाला।

ऋषिः ओके, आगे पापा।

पापाः योग वशिष्ठ में आगे लिखा गया है कि पूर्व जन्म के कर्मों का अभाव होने से वे पूर्ण स्वतंत्र जीव नहीं थे। उनमें वासना, भय, शंका, पलायन की भावनाएं भी नहीं थीं। वह न तो सामने आने वाले शत्रु को जानते थे, न शत्रु द्वारा आक्रमण से डरते थे, न आक्रमण को पहचानते थे, न जीवन जानते थे, न मरण जानते थे, न युद्ध जानते थे, न जय–पराजय जानते थे।

ऋषिः फिर लड़ते कैसे थे?

पापाः लिखा है कि जो व्यक्ति उनके सामने शस्त्र प्रहार करने का प्रयास करता था उसे वे मार डालते थे।

ऋषिः यह तो हूबहू कृत्रिम बुद्धि वाले रोबोट के वर्णन जैसा लगता है।

पापाः सही समझे, प्राचीन ग्रंथ 'योग वशिष्ठ' के इस रचयिता की कल्पनाशीलता तो देखो कि एक हुबहू ए.आई. मेगारोबोट की ही कल्पना कर डाली।

सारिकाः फिर तो विकट युद्ध हुआ होगा पापा?

पापाः उल्लेख है कि तीनों सेनापतियों ने देवताओं की सेना को तहस–नहस कर दिया। देवताओं की करारी हार हुई। वे भागकर ब्रह्मा जी के पास पहुंचे।

ऋषिः फिर क्या हुआ पापा?

पापाः ब्रह्मा ने कहा कि आप इनके साथ छल से युद्ध करें।

सारिकाः छल से क्या मतलब?

पापाः मतलब कभी युद्ध करें, कभी रणभूमि छोड़कर भागें। कभी डर जाएं तो कभी प्राणों की भीख मांगें।

सारिकाः इससे क्या हुआ होगा?

पापाः रचयिता के अनुसार इससे उनमें अहंकार, वासनाएं, भावनाएं, जीत–हार और पलायन की भावनाएं पैदा होंगीं।

ऋषिः तो क्या देवताओं ने ऐसा किया?

पापाः हां आगे प्रसंग आता है कि देवता कभी युद्ध करते, कभी रण छोड़ कर भाग जाते। कभी लड़ने लगते तो कभी छुप जाते। कभी प्राणों की भीख मांगते। इस तरह उन्होंने युद्ध को करीब 40 वर्षों तक चलाया।

सारिकाः 40 वर्ष?

पापाः इतने समय में दाम, व्याल और कट में अभिमान की भावना का जागरण होने लगा था। फिर उनमें भावनाएं उत्पन्न हुई। भय उत्पन्न हुआ। डर उत्पन्न हुआ।

सारिकाः इससे क्या हुआ पापा?

पापाः पहले वे जो बिना डरे प्रहार करते थे, हमेशा प्रहार करने को तत्पर रहते थे, उस में शिथिलता आने लगी। धीरे–धीरे वे अपने युद्ध कौशल को भूलकर युद्ध से डरने लगे। अपने शरीर की

रक्षा के लिए चिंतित रहने लगे। उनमें भय, पलायन और वासनाओं का उदय होने लगा। वे रणभूमि में डर कर भागने इधर–उधर भागने लगे। अंत में देवताओं ने उनका नाश कर दिया।

ऋषिः कमाल है।

पापाः यही तो बात है कि शंबरासुर ने उन्हें रोबोट की तरह बनाया था पर उनकी कृतिम बद्धि के कारण उनमें भावनाएं पैदा हुईं, डर उत्पन्न हुआ, उन्हें अपनी ही सुरक्षा की चिंता होने लगी जिससे वह रण से विमुख होने लगे और अंत में नष्ट कर दिए गए।

सारिकाः पापा आप ठीक कहते हैं। ये दाम, व्याल और कट तो कृत्रिम बुद्धि वाले रोबोट ही रहे होंगे।

पापाः रहे होंगे नहीं, रोबोट्स की ही कल्पना रही होगी। तब विज्ञान इतना विकसित ही कहां था कि वे रोबोट बना पाते।

सारिकाः ओह।

ऋषिः यू आर राइट पापा।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

नैरेटरः दोस्तो आज विज्ञान रेडियो धारावाहिक 'आने वाला कल' की इस कड़ी में आपने सुना कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी कृत्रिम बुद्धि युक्त मशीनों की विस्तृत कल्पनाएं मिलती है। पर इसका मतलब यह नहीं है कि उस समय ऐसी मशीनें सचमुच में रही होंगी। क्योंकि तब के विज्ञान में इतनी सामर्थ्य ही कहां थी?

विज्ञान रेडियो धारावाहिक 'आने वाला कल' की अगली कड़ी में हम कुछ और प्राचीन ग्रंथों में इस प्रकार की कृत्रिम बुद्धि युक्त मशीनों की कल्पनाओं की बात करेंगे, जिनके विवरण बहुत हद तक आज की कृत्रिम बुद्धि वाली मशीनों से मिलते हैं।

तो सुनना न भूलिए, आज के ही दिन आज के ही समय, रेडियो विज्ञान धारावाहिक 'आने वाला कल' की अगली कड़ी, तब तक के लिए नमस्कार।

ऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋऋ